आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:20/01/2023; Published:31/01/2023

कहानी

दुःख और आसूं

डॉ.बायजा कोटुळे

मूल: सौ. ललिता नागोराव गादगे

बस मे से उतरे अब तक रिमझिम हो रही बारिश अब जोरो से होने लगी। रिक्षा के पहुँचने तक हम दोनो पुरी तरह से भीग गये। वैसे साडे आठ हुये होंगे परंतु बारिश के कारण सडके सुनसान थे -। रास्ते के तूप के उजले मे बीच बीच मे अंधेरे के टूकडे गिले पडे थे। पुरी यात्रा मे शांत स्तब्ध रहिमा अभी भी चूप ही थी।

बारिश की तरफ, अंधेरी के तरफ, पीचे छोड आये घर की तरफ, दुकान की तरफ, न जाने किस चीज की तरफ देख रही थी, ये समझ मे नही आ रहा था, या फिर किसी भी तरफ नही देख रही होगी। गली मे आ गये और मै भ्रम पड गयी। तीनसाडे - तीन साल पहिले एक बार आई थी बाबा के घर। पर रात के समय आई थी, और सुबह वापीस गयी थी, गल्लियौ की हल्की सी याद थी, उसके अनुसार रिक्षावाले को बता रही थी। बारिश फिर से रिमझिम शुरू हुई थी, जिसमे एक उदास लय का अनुभव हो रहा था। ऐसा लग रहा था कि किसी ने ऐसी कॅसेट लगा ली थी। गली मे जाते ही गाने के सूर कम जादा सुनाई दे रहे थे ' ना किसी की आख का नूर हुं...ना किसी के दिल का करार हो...'बारिश में भिगते हुए आ रहे सूर बारिश को भी भिगा रहे है ऐसा लग रहा था, और बारिश ओर उदास लगने लगी। वह सूर व बारिश दिलभर रिसन हो रही थी, तभी में रिक्षा से घर देख रही थी। सभी बंगले एक जैसे थे। जानकी नामक बंगला दिखाई दिया और रिक्षा वही रुकाया।

फिरसे एक बार मालूमात कर ली। हा,वही है बाबा का बंगला। अंगन में बहुत सारे लोग थे। उनके उदास चेहरों से लग रहा था कि यही वह घर है।

सामने वाले बंगले की तरफ आश्चर्य से देखने वाली माँ को उतारा और मुख्यद्वार की तरफ मुडे। मुख्यद्वार की आवाज से आखों मे बहुत बडा सवाल लेकर कुछ लोग आंगन से दरवाजे मे आये ल 'कौन हैं? सुहास तो नही' ऐसा कहते हूये हम कोण होंगे, ये सोचते हुए वही रुके। सुहास की राह देख रहे होंगे सभी। सुहास - बाबा का बडा बेटा। मद्रास मे रहता है पढने के लिए। वैसे मुझ से पाचसाल छोटा हि था छ -। 'आया

सुहास?' कहते हुए एक औरत अंदर से बहार आई। मैं पहचानती नही थी। शायद सुहास की मामी, मासी कोई तो होगी। हमे देखते हुए तुरंत मुड गयी। तब तक आंगण मे पोहच गये। मेरा मामा वही एक कोने मे बैठा था। वह जल्दी से उठा और हमे तुरंत अंदर लेकर गया। लोगो से भरे हुए बैठक मे से अंदर जाते समय दिल मे बोज लगने लगा। कौन सा दृश्य दिखाई देगा? अब तक शांत रही माँ का संयम टूटेगा क्या? कैसे संभालू उसे? मुझे भी बहुत रोना आयेगा क्या? अंदर की बेडरूम भरी हुई थी। सुहास के मा की ओर के सभी रिश्तेदार दिखाई दे रहे थे। कल शाम मे हुआ था यह। चोवीस घंटे हो गये थे। 'सिर्फ सुहास नही आया था इसीलिएहमारी क्यू रहा देखेंगे ...? मन बिना वजह आह भरने लगा।

कमरे के बीच मे बाबा का शव रखा था। घुटनो मे मुडा हुआ, सफेद चादर से ढका हुआ । लंबासा सर के पास सुनी बैठी थी, तो दिल पर सर रखकर रेखा रो रही थी। सुनी और रेखा सुहास की छोटी बहने थी। पैर के पास मेरी दादी भाव विवश दिखाई दे रही थी। मा को देखते ही उसने जोर से रोना शुरू किया और कुछ समय पहिले शांत रहा माहोल आक्रोश से फना उठाया। एक दुसरे को समजाते हुए सभी फुसफुसाने लगे। पेट मे हलचल हुई दिल भर आया। थोडी देर के लिए लगा मै भी स्वयं बाबा के शव पर गिरकर खूब रोऊ।

पर वैसा कुछ हुआ नही। आखों मे पानी नही आ रहा था। सिर्फ पेट मे कुछ हो रहा था। चुपचाप सभी का दिल तोडणे वाला आक्रोश देखते हुए, सुनते हुए दिवार को पीठ लगाकर खडी रही। दादी मा को गले से लगाकर याद करते हुए रोने लगी। पर मा की आखे सुखी थी। वह दादी की गोद मे चुपचाप पडी थी। वह रो नही रही थी। इसका आश्चर्य सभी के आखो मे दिखाई दे रहा था। मुझे भी लगा था मा ने रोना चाहिए। पता चलने पर भी वह रोई नही थी। अब तक आखो से पानी नही निकला था। पर आप तो रोना चाहिए। लोगों के लिए तो रोना। फिर भी आखों मे पानी नही आ रहा है। तो कैसे रो सकती है? जिस याद से आखे गिली होनी चाहिए ऐसी एक भी याद बाबा ने उसके आचल मे नही डाली क्या ? फिर मेरा जन्म कैसे हुआ ? या वह सिर्फ एक प्राकृतिक आपदा थी। मैं आठवी मे थी तब से मतलब बारा साल से हम दोनो ही रहते आये है। फिर भी मा ने कभी भी बाबा के खिलाफ कोई शिकायत नही की थी। किसी की शादी, किसी का नामकरण ऐसे कार्यक्रमो मे वह बडे उत्साह से, आनंद से उस में शामिल होती थी मकरसंक्राती का वानवसा, सोमवार मन से करती थी। हम ब्राह्मण के पडोस मे रहने लगे तब से तो वह हरतालिका और हलदी कुंकुम के कार्यक्रम भी मेरे विरोध के बावजूद मन लगाकर किया करती थी। फिर उसकी आखो मे पानी क्यू नही आ रहा?

'दादी ', चूप बैठो अब।' जानकी' को सुई लगाकर सुलाया है। दिन भर बेहोश होती थी वह, पता है ना आपको। नींद खुलेगी उसकीरेखा !, सुनी आप भी संभालो अब। ऐसे में मा को कुछ हो गया तो? यह सुहास

की माशी होगी। सुहास की मा कमरे में नही है ऐसा पहलीबार लगा। दादी चूप हो गई और मा उठी। सर के पल्लू को संभालते हुए बाबा के मुडे हुए पैर के पास रुकी। पलभर उस शव की तरफ शून्य नजर से देखती रही।' चेहरा खुला करो, देखने दो।' कोई तो बुदबुदाया। बाबा के चेहरे पर का कपडा बाजू में किया गया। नाक आख से सुंदर, भारदस्त, भरगच्च बालोवांला चेहरा थोडासा विद्रूप हो गया था ...। मा ने उस तरफ देखा ही नही। उसकी नजर मे एक कठोर उदास निग्रह दिखाया सामने वाले ने नकार देने के बाद स्वाभिमानी नजर में दिखाई देता है वैसा और बाबा के पैर पर झुकी। हात जोडकर उसने पैर पर माथा रखा, और झट से दूर दिवार को लगकर बैठी रही 'नजर में वही उदास निग्रह लेकर, उसकी नजर में का वह निग्रह पहचान वाला लगा....याद आया...'मै देड दो साल की थी तभी सुहास की मा का बाबा से संबंध आया था-। उसकी चर्चा गाव में रहने वाली मा के कान पर आयी। दादाजी गुस्सा हो गये, परंतु माँ कभी नाराज नही हुई थी। मतलब इतनी पण इतनी पढाई करने वाला सुंदर पती, उसने ऐसा करना स्वाभाविक है ऐसा उसको लगा होगा। मन ही मन में दुख करने के सिवा उसने कोई विरोध नही किया था। हो सकता है, बाबा ने कभी उससे प्रेम नही किया होगा, या प्रेम का ऐसास ही उसे नही था, जिसके कारण प्रेम की ईर्षा नही थी। स्वयं का अनपढ होना, स्वयं का कुरूप होना इसका ऐसास था या उसकी आत्मा ने उतना सह लिया। कारण कौन कौन से थे उसे पता नही होंगे, पर वह सब उसने चुप रहकर सह लिया। सह लेणे के सिवा कोई उपाय दिखाई नही दिया होगा। दादाजी का विरोध सहकार बाबां ने सुहास की मा से शादी की।' मुझे कहा सौतन के साथ संसार करना है। रहेगी वह शहर में, मेरे लिये मेरा घर है, मा पिता समान सास ससुर हैमहिना दो ... का पिता तो बस महिने में भी आया पुष्पा।' ऐसा मानकर उसने स्वयं को समझाया था, ऐसा मेरी एक मासी ने बताया। परंतु सुवास की मा से शादी होने के बाद बाबा ने गाव आना लगबग बंद किया था । एक साल बाद आये थे।

मैं वैसे बहुत छोटी थी। साड़े पाँच साल की होगी। हल्की सी याद थी मा उस दिन बहुत खुश थी। मैं और मा हर दिन रात में दादी के पास आंगन में सोया करते थे। उस रात मुझे नींद लगने के बाद मा अंदर गयी थी। सुबह नींद खुली और रोने लगी। दादी उठी। अंगण में सोये बाबा उठे। दादाजी उठकर अंदर गये मा - वही होगी इसीलिए मैं दौंडते हुए अंदर गई। मा की आखे रो लकर पुरी की तरह छोटी हुई थीरोकर फु -। दादाजी ने उसके पीठ पर हात रखते हुए पूछा,' पांडुरंग नही आया अंदर?मा ने आखे पूछते हुए सर से ही नही कहा था। दुसरे दिन सुबह उसकी रोरोकार बडी हुई आखो में ऐसा ही उदास निग्रह थळ उस घटना की - व्यथा,उस नजर का अर्थ मुझे अभीपहले मालूम हुआ था अभी पाच छ साल-। उसके पहिले भी वह घटना और नजर मन पर वैसी छाप डालकर गयी थी। फिर कभी माँ को मैंने उस दिन से कभी खुश नही देखा।

रोने की आवाज सुनकर लगासुहास आया होगा ...। गल्ली के किसी प्राध्यापक की बीवी होगी। वह हम दोनों की तरफ देखते हुए कह रही थी। मैं अभी भी खडी थी। पैर को चिटिया आने लगी है ये महसूस करते हुए दरवाजे के पास खुली जगह थी वही बै ठ गयी।

' देखो न, अभी भी नही आ रहा है, रोती सुरत से सुनी ने कहा, आयेगा, नजदीक थोडा ही हैं मद्रास?' उस औरत ने उसे समजाते हुए कहा। पाच दस मिनिट सुनी के पास बैठकर वह औरत उठी बाहर बैठक के दरवाजे में किसी से तो धीमी आवाज में वह बोल रही थी,' सर की पहिली बीवी शायद?''हाऔर ! वह लडकी।' उस औरत ने दरवाजे से फिर से मुझे और मा को देखा और निकल गई।

'पहले से नाता है शायद आपका। कोई मामा को पूछ रहा था।

'हाबुवा मामा की बेटी है हम !। पांडुरंग हमारे मामा का बेटा।'मामा बता रहा था। पाच दस मिनिट के बाद और एक औरत आई और आगे अर्धा पाऊण घंटे औरते आ जा रही थी आश्चर्य से मेरी तरफ और माँ की तरफ देखती हुई रेखा, सुनी को समजाते हुए हम कैसे आये घर मे चैन ही नही मिल रहा था यह बता रही थी। मा की तरफ देखते हुए कुछ तो ध्यान है ऐसा दिखाई दे रहा था। मा को भी समझ मे आ रहा होगा। उसने नीचे किया हुआ सिर ऊपर नही किया। काला रंग, आकार न होनेवाला लंबा शरीर बडे ओठ आदि कमीया वैसे उसके मन मे हमेशा से थी।

'मैं सुंदर होती तो पुष्पा के पिता ऐसा मुह मोड नही लेते? 'ऐसा अफसोस वह उसकी सहेलीयों से हमेशा से करती आ रही थी। जब से मुझे समझने लगा था तब से मैं मां को ऐसी बाते करने नही देती थी। एक बार कहा था,'मां सुहास के माँ के समान पढीलिखी होती थी -, तो ऐसा नही होता था। सौंदर्य के सिवा तुम्हारा अनपढ होना जीवन पर बिता। जीवन बरबाद हुआ है।

इस बात पर उसने कहा था, चल 'पगली है तू। कितनी भी क्यू पढी हो तो भी उसके लिये सौंदर्य जरुरी है। पुरुषों की जात सौंदर्य पर फिदा होती है। उस औरत के पास सौंदर्य नही है उस औरत का जीवन, जीवन नही है। पडे लिखे पुरुष को सौंदर्य ही चाहिए। मां के अनुभव के बोल थे वह मैं विरोध कैसे कर सकती थी।

मै पिता के सौंदर्य पर गयी थी, इसी कारण बहुत खुश थी। 'कुछ नही' तो नही स्वयं के जैसी सुंदर बेटी दी थी बाबा ने उसे।' ऐसा व अभिमान से कहती थी। मेरे जैसा मेरे बेटी का नही होगा। कितनी सुंदर है पुष्पी ऐसा उसके मन का विश्वास था। दिल की रानी होगी वह अपने पती की, ऐसा वह कहती थी।

अभी लिया था ना चाय? विद्याबाई लेकर आई थी। और क्यू लाया? सुहास की मामी चाय लेकर आई हुई औरत को कह रही थी।

क्या हो रहा है फिर? देखो, कैसे चेहरे सुख गये है लडकियों के और हम दोनो अभी आई है शायद? हम दोनो के तरफ देखते हुए चाय की प्याली भरी ।बडी कंटली भर के चाय लायी थी उस औरत ने । सभी को दे दिया। मेरे सामने चाय की प्याली रखते हुए कहा ' लो'। मुझे आश्चर्य लगा। रेखा, सुनी को प्यार से लो बेटा कहा था उन्होंने । उन्ही के पिता की मैं बडी बेटी थी । मुझे सिर्फ लो। मानवीय संबंधो की यह रेलचेल कितनी विचित्र है। कितने पराये थे हम वहा। बाहर बारिश की शांत लय सुरू थी । सभी ने चाय उस कमरे से बहार आकर लिया था । मैं भी बाहर के कमरे में कप लेकर आई ।मा ने निग्रह के साथ नही ऐसा कहा उसके नही मे निग्रह इतना स्पष्ट था की वह औरत थोडी घबराई। लेकिन मुझे चाय चाहिये था । यात्रा से भीगना बीच बीच मैं लगनेवाली थंड और दोपहर से पेट में लगने वाली बुक इसी कारण वह उबली हुई चाय आवश्यक लगी। चाय लेने के लिए उठाते हुए रेखा सुनी को बहुत समजाना पडा था । वह उठ नही रही थी। सुबह से एकदो चाय के कप पर थी दोनो लडक -िया अन्न का एक निवाला नही था पेट में । सभी का प्यार से मनाना शुरू था । और फिर से दुख से उमडते हुए रो रही थी। उनको समजाते हुए मासी ने चाय पिलाया और तब मुझे इर्षा हुई दोनो से। मुझे उन दोनो इतना दुख नही हुआ था इसी कारण मैने चाय का कप झट से उठाया। जिंदा थे तब हमे बाबा ने दूर रखा। मरने के बाद वही परायापण ही हिस्से में आया। ' सन्मान सत्कार का दुःख हिस्से में आने के लिए नसीब की बात होगी ना?'

कुछ भी हुआ तो भी चाय लेना मेरे लिए जरूरी था। शरीर धर्म कैसे भुलेंगे? ऐसा मन को समजाते हुए कप मुह को लगाया मा ने क्यू मना किया बाबा के उपर के प्रेम के लिये? कदापि नही । आखों में पानी तो आया नही, फिर चाय कैसे पी लिया ऐसा लोक कहेंगे इसलिये? कुछ भी कहो, उसका निग्रह जबरदस्त रहता है ।

मुझे बाबा के साथ पढने के लिये शहर मे नही भेजना ये निर्णय भी उसने वैसे ही निग्रह से लिया था। हमारा गाव छोडकर मैके मे आकर रहने का निर्णय भी ऐसा ही था। आगे हिस्सा मागणे का निर्णय भी उसने उतने ही निरधार से लिया था। मैं सातवी में थी मामा ने हिस्सा मागणे की भाषा शुरू की । माँ ने वह स्वीकार किया था । सभी बाते बाबा के कान पर गई थी। कोर्ट में न जाते हुए आपस में सुलजाने के लिए बाबा ने दादी को भेजा था। दादाजी को जाके साल देड साल हुआ था -,और हम नैनिहाल में रहने के लिए आये ।

दादी ने प्यार से बोलना शुरू किया,' सरे, बेटी जैसी जिद्द मत कर। आकर रहने से रिश्ता तुटता नही है? किचंड और पानी कभी छूटा है?ऐसा कहते है। चल, घर है। खेती बाडी भी है, मैं मामी हुं तेरी। मुझ पर विश्वास रख। कोर्ट की शिडी समजदार ने कभी नही चढना। यह ऐसी गलत बात मन से निकाल दे। मैं जिंदा हू तब तक ऐसी गलती मत कर। मेरे पंख के नीचे रहे । लडकी को ले जाकर पढाता हू ऐसा कहता है, फिर ऐसी जीत किस लिये अभी भी कुछ बिगडा नही है। पुष्पी पढेगी गाव में भी ।

दादी की बात बीच मे काटते हुए माने सुनाया था मामी आपको भी पता है मेरा स्वभाव दिखने मे कुरूप मगर उतनी ही कोटर अब नही बंद सकती किसी से ये सब क्यू कर रही हू इस बात का पता भी है आपको बहुत देखा है सभी के राज अच्छा दस बारा साल रही आपके पास दिल को जलाते हुए भी चारपाच - साल रही होगा एक ही बच्ची है मेरी दो पेट के लिये रात दिन कष्ट नही होगा मुझसे की पाठशाला भी समाप्त की उसको लेकर शहर मे जाकर रहना चाहती हु वह पर लिखकर हुशार हुई तो मेरे स होती है यहान्मान रस्सी से हात बांधना उसके नसीब में नही होगा हा कर रहे है तो मुझे मेरा खेत देदो और आप भी रो हमारे साथ अलग पकाक कर खायेंगे लेकिन वाह नही आऊंगी काम करना है शहर मे कपडे बर्तन करूंगी और बच्चे को पढाऊंगी इतनी ही इच्छा है अब!

कुछ भी हुआ तो भी चाय लेना मेरे लिए जरूरी था। शरीर धर्म कैसे भुलेंगे? ऐसा मन को समजाते हुए कप मुह को लगाया मा ने क्यू मना किया बाबा के उपर के प्रेम के लिये? कदापि नही। आखो में पानी तो आया नही, फिर चाय कैसे पि लिया ऐसा लोक कहेंगे इसलिये? कुछ भी कहो, उसका निग्रह जबरदस्त रहता है।

मुझे बाबा के साथ पढने के लिये शहर मे नही भेजना ये निर्णय भी उसने वैसे ही निग्रह से लिया था। हमारा गाव छोडकर मैके मे आकर रहने का निर्णय भी ऐसा ही था। आगे हिस्सा मागणे का निर्णय भी उसने उतने ही निरधार से लिया था। मैं सातवी में थी मामा ने हिस्सा मागणे की भाषा शुरू की। माँ ने वह स्वीकार किया था। सभी बाते बाबा के कान पर गई थी। कोर्ट में न जाते हुए आपस में सुलजाने के लिए बाबा ने दादी को भेजा था। दादाजी को जाके साल देड साल हुआ था -,और हम नैनिहाल में रहने के लिए आये।

दादी ने प्यार से बोलना शुरू किया,' सरे, बेटी जैसी जीदद मत कर। आकर रहने से रिश्ता तुटता नही है? किचंड और पानी कभी छूटा है?ऐसा कहते है। चल, घर है। खेती बाडी भी है, मैं मामी हुं तेरी। मुझ पर विश्वास रख। कोर्ट की शिडी समजदार ने कभी नही चढना। यह ऐसी गलत बात मन से निकाल दे। मैं जिंदा हू तब तक ऐसी गलती मत कर। मेरे पंख के नीचे रहे। लडकी को ले जाकर पढाता हू ऐसा कहता है, फिर ऐसी जीत किस लिये अभी भी कुछ बिगडा नही है। पुष्पी पढेगी गाव में भी।

दादी की बात बीच में काटते हुए माँ ने सुनाया था। मामी, आपको भी पता है मेरा स्वभाव। दिखने में कुरूप हुं मगर उतनी ही कठोर हुं अब नही बंन सकती किसी से यह सब क्यू कर रही हुं इस बात का पता भी है आपको ।बहुत देखे है सभी के राज। अच्छा दस बाराह साल रही आपके पास। दिल को जलाते हुए भी चार पाच साल रही-। अब नही होगा। एक ही बच्ची है मेरी। दो पेट के लिये रातदिन कष्ट नही होगा मुझ से -। अब पुष्पि की पाठशाला भी समाप्त होती है यहा की। उसको लेकर शहर में जाकर रहना चाहती हु। वह प ढ हात बांधना उसके नसीब में नही होगा हा लिखकर हुशार हुई तो मेरे समान रस्सी से -। कह रहे है तो मुझे

मेरा खेत दे दो,और आप भी रो हमारे साथ। अलग पकाकर खायेंगे । लेकिन वहा नही आऊंगी अब । कही भी काम करना है । शहर में कपडे बर्तन करूंगी और बच्ची को पढाऊंगी । इतनी ही इच्छा है अब !

इस बार दादी चुप हो गई। था ही चार पाच एकड का तुकडा-। बांट लेने के बाद छोटे चाचा को करणे इतनी भी नही रहती थी खेती । दादी गुस्से से निकल गई थी । आगे बहुत दिनो तक चर्चा सुरू थी । माँ मुझे लेकर शहर में रहेगी बाबा हर महिने दो तीनशे रुपये भेजेंगे ऐसा तय हुआ । मुझे याद है,इस में बाबा ने कभी गलती नही की। सौ देड सो जादा ही आने लगे। साल में एक दो बार -।वैसे बाबा के पैसे से ही जीवन जिया हम ने। फिर भी क्यू आक्रोश नही था? मन भरने के लिए इतना ही काफी नही, सच्चाई है ।

इस बारिश ने तो हद कर दी देखो। कल तो ये बेचारा बंद हुआ तो ठीकचार दिन कैसे रखेंगे -तीन... इसको?

बैठक में कोई चिंता के स्वर में बोल रहा था। बारिश सच मे बड गई थी । मैं उठकर अंदर आई । माँ वैसे ही बैठी थी। साडे ग्यारा बारा बजे होंगे और आने जाने वाले बंद हुए थे-। घर के ही स्त्री पुरुष बचे थे। फिर भी पडोस के दो चार पुरुष और दो तीन औरते थी-। पर घर बहुत शांत हुआ था । थोडी देर बाद बारिश ने भी अपनी शांत लय पकड ली बाहार शांती से अंधेरा शांती से धन्यवाद और मृत्यु को गोद मे लेकर स्तब्ध घर सब कैसा तने हुए तांगे के कपडे के समान लग रहा था ।

कुछ भी हुआ तो भी चाय लेना मेरे लिए जरूरी था। शरीर धर्म कैसे भुलेंगे? ऐसा मन को समजाते हुए कप मुह को लगाया मा ने क्यू मना किया बाबा के उपर के प्रेम के लिये? कदापि नही । आखो में पानी तो आया नही, फिर चाय कैसे पि लिया ऐसा लोक कहेंगे इसलिये? कुछ भी कहो, उसका निग्रह जबरदस्त रहता है ।

मुझे बाबा के साथ पढने के लिये शहर मे नही भेजना ये निर्णय भी उसने वैसे ही निग्रह से लिया था। हमारा गाव छोडकर मैके मे आकर रहने का निर्णय भी ऐसा ही था। आगे हिस्सा मागणे का निर्णय भी उसने उतने ही निरधार से लिया था। मैं सातवी में थी मामा ने हिस्सा मागणे की भाषा शुरू की । माँ ने वह स्वीकार किया था । सभी बाते बाबा के कान पर गई थी। कोर्ट में न जाते हुए आपस में सुलजाने के लिए बाबा ने दादी को भेजा था। दादाजी को जाके साल देड साल हुआ था -,और हम नैनिहाल में रहने के लिए आये ।

दादी ने प्यार से बोलना शुरू किया,' सरे, बेटी जैसी जीदद मत कर। आकर रहने से रिश्ता तुटता नही है? किचंड और पानी कभी छूटा है?ऐसा कहते है। चल, घर है। खेती बाडी भी है, मैं मामी हुं तेरी। मुझ पर विश्वास रख। कोर्ट की शिडी समजदार ने कभी नही चढना। यह ऐसी गलत बात मन से निकाल दे। मैं जिंदा

हू तब तक ऐसी गलती मत कर। मेरे पंख के नीचे रहे। लडकी को ले जाकर पढाता हू ऐसा कहता है, फिर ऐसी जीत किस लिये अभी भी कुछ बिगडा नही है। पुष्पी पढेगी गाव में भी।

दादी की बात बीच में काटते हुए माँ ने सुनाया था। मामी, आपको भी पता है मेरा स्वभाव। दिखने में कुरूप हुं मगर उतनी ही कठोर हुं अब नही बंन सकती किसी से यह सब क्यू कर रही हुं इस बात का पता भी है आपको ।बहुत देखे है सभी के राज। अच्छा दस बाराह साल रही आपके पास। दिल को जलाते हुए भी चार पाच साल रही-। अब नही होगा। एक ही बच्ची है मेरी। दो पेट के लिये रातदिन कष्ट नही होगा मुझ से -। अब पुष्पि की पाठशाला भी समाप्त होती है यहा की। उसको लेकर शहर में जाकर रहना चाहती हु। वह प ढ लिखकर हुशार हुई तो मेरे समान रस्सी से हात बांधना उसके नसीब में नही होगा हा -। कह रहे है तो मुझे मेरा खेत दे दो,और आप भी रो हमारे साथ। अलग पकाकर खायेंगे। लेकिन वहा नही आऊंगी अब। कही भी काम करना है। शहर में कपडे बर्तन करूंगी और बच्ची को पढाऊंगी। इतनी ही इच्छा है अब !

इस बार दादी चुप हो गई। था ही चार पाच एकड का तुकडा-। बांट लेने के बाद छोटे चाचा को करणे इतनी भी नही रहती थी खेती। दादी गुस्से से निकल गई थी। आगे बहुत दिनो तक चर्चा सुरू थी। माँ मुझे लेकर शहर में रहेगी बाबा हर महिने दो तीनशे रुपये भेजेंगे ऐसा तय हुआ। मुझे याद है,इस में बाबा ने कभी गलती नही की। सौ देड सो जादा ही आने लगे। साल में एक दो बार -।वैसे बाबा के पैसे से ही जीवन जिया हम ने। फिर भी क्यू आक्रोश नही था? मन भरने के लिए इतना ही काफी नही, सच्चाई है।

इस बारिश ने तो हद कर दी देखो। कल तो ये बेचारा बंद हुआ तो ठीकचार दिन कैसे रखेंगे -तीन... इसको?

बैठक में कोई चिंता के स्वर में बोल रहा था। बारिश सच मे बड गई थी। मैं उठकर अंदर आई। माँ वैसे ही बैठी थी। साडे ग्यारा बारा बजे होंगे और आने जाने वाले बंद हुए थे-। घर के ही स्त्री पुरुष बचे थे। फिर भी पडोस के दो चार पुरुष और दो तीन औरते थी-। पर घर बहुत शांत हुआ था। थोडी देर बाद बारिश ने भी अपनी शांत लय पकड ली बाहार शांती से भिगनेवाला अंधेरा, शांती से ढ लनेवांली रात और मृत्यु को गोद मे लेकर स्तब्ध घर सब कैसा तने हुए तांगे के कपडे के समान लग रहा था ...।

चलो, सो जाओ थोडा। नही तो बिमार होंगे। हम है यहा माशी ने रेखा सुनी को उठाया और बाजू मे उनको माँ सोई हुई कमरे में लेकर गई।

वह दोनो उठकर चले जाने के कारण बाबा का पुरा शव मेरे सामने आया। सभी कहते है मैं उनके समान दिखती हू। इतना ही है हमारा रिश्ता? मन को चिरने के लिए ये दर्द कैसा बस होगा। सिर्फ जन्म दे दिया यह कारण बस नही होगा। एक साथ रहना, एक दुसरे के लिए बहुत कुछ करना, यह सब बाते

आवश्यक है संबंध को गहराई तक पोहूचने के लिए। मुझ में तो कुछ समझ नही थी तब से माँ के पास रही हू। बहुत पढे हुए, हुशार प्राध्यापक है। अपने पिता का गर्व महसूस होता था। लेकिन दसवी तक, बाद में उनके प्राध्यापक पद का थोडा गुस्सा आने लगा। वैसे दो तीन महिने रही थी उनके पास नही उनके घर मेंचौथी ... के साल में पडाऊंगा कहा था इसी कारण मुझे लेने के लिए आये थे बाबा। मजा है तुम्हारी। अब क्या शहर के पाठशाला में जायेगी। नये कपडे, नये किताबे बडी पाठशाला,हमे भूल जायेगी न पुष्पे? सहेलिया ने कहा था। मैं भी इन सभी बातो से खुश हुई थी। बडे बाप की बेटी कहकर मैं घुमूंगी ऐसा लग रहा था। माँ से दूर रहना पढेगा यह दुख भूल गई थी। वैसे मैं ग्यारा साल की थी तब। देर से पाठशाला में डाला था। सुहास उस समय होगा छ सात साल का अंग्रेजी स्कूल में जाता था। सुनी तीन चार साल की तो रेखा बच्ची थी। सुहास की माँ अध्यापिका। वह नोकरी पर गयी तो घर पर कोई होना चाहिये,इसीलिए पाठशाला में मुझे डाला था। रेखा को संभालना, कपडे धुना, घर को झाडू लगाना, फर्ष साफ करना, खाना बनाते समय मदत करना ऐसी कामे मुझे स्कूल में जाने तक और वापिस आने के बाद भी करनी पडती थी। नये किताबे, काफी लायी थी पर बाबा ने नही, सुहास के माँ ने कपडे महिनाभर पुराने ही थे (झगे)। श्याम के समय मै रेखा को लेकर बैठती थी और सुहास कि माँ सुहास को पढाती थी। बहुत ईर्षा होती थी उससे पर सुहास का वह सुख मुझे मिलना बहुत मुश्किल था। इस यथार्थ को जान सखू इतनी मेरी उम्र थी। बहुत पढाई करू ऐसा लगता था, पर समय नही मिलता था इस बात का दुःख लगता था। उन तीन महिने में बाबा ने एक बार भी मुझ से बात नही की थी। बाबा सुहास, सुनी को लेकर बाहर जाते थे। कभी रेखा को घर पर रखकर सुहास की माँ और वें जाते थे। 'में सुहास के माँ की नही, इसी कारण मुझे ऐसा ही रहना चाहिए।'यह मैंने न समजते हुए स्वीकार किया होगा। जादा दुःख नही होता था। परंतु बाबा बात नही करते, इस कारण उस घर में नही रहना चाहिए ऐसा लगता था। महिने बाद बाबा ने मेरे लिये दो फ्रॉक लाये। उस रात सुहास के माँ का और उनका बहुत झगडा हुआ था।

'थोडा रुक नही सकते थे। मैं नही लाती थी' इतना कुछ लगता था। उनके प्रति तो फिर मुझे क्यू लाये? ऐसा कुछ कहने तक दोनो का बजा था। वह फ्रॉक पहनते हुए खुश होती थी, पर ऊस झगडे की याद आयी तो हो झगडे की याद आई तो वह फ्रॉक नही पहना चाहिए ऐसा भी लगता था। बाबा ने मेरे लिये लाये हुई वही पहिली और वही आखरी कपडे। उनके रुमाल बहुत दिन फटने के बाद भी खूब संभालकर रखे थे मैंने। सुहास के माँ की एक बात अच्छी थी, व मुझ से बाते करती। कभी मेरी भाषा पर हस्ती, उसे सुधारने का प्रयास भी करती, खानेपीने क-े लिए कहती पर बाबा का मेरी तरफ देखना भी अच्छा नही लगता उसे। तीन महीने के बाद दिवाली की छू टिया लगी। मैं गाव माँ के पास आई। 'शहर में पढने के लिये जाना'इस सपने को विशेषतपास रहना इस सपने को बहुत जुलूम हुआ था बाबा के :। माँ की गोद में जा के बहुत रोते रोते जितना हो सके उतना सब बता दिया था। माँ भी अपनी हाथ की उंगलीया तोडते हुए, गालिया देते हुए

मेरे पीठपर से हाथ रखते हुए रोते रोते सुन लिया था। पाठशाला सुरू हुई। बाबा का संदेश आया निवृत्ती को पुष्पा को लेकर आने को कहो। निवृत्ती मतलब मेरा चाचा। पर माँ ने जोर लगाकर बताया,'लडकी को भेजना नही। जितना पढना है उतना यही पढेगी।' दादी, चाचा ने बहुत शोर किया। पर माँ अपने निर्णय पर ठाम थी। और फिर से गाव के पाठशाला में जाने लगी।

लेकिन व इतना सा अनुभव फिर बहुत संभालकर रखा था दिल के कोने मेंयाद आई तो पलभर ही ... बाबा के पास थी तब अंदर की कमरे में अकेली सोती थी ...क्यू ना हो बाबा को लेकर मन भर जाता है। सुहास कि माँ, बाबा और सुनी रेखा उनके कमरेमे सोते थे। मेरे कमरे में वैसे ऐसे अंधेरा ही रहता था। उस दिन मुझे दिन भर बुखार था। रात में भी था। सुहास के माँ ने गोली दी थी। शरीर में दर्द था। माँ की याद में रोना भी आ रहा था, रोते रोते ही कभी तो नींद लगी थी-। नींद में भी फुसफुस हो रहा था शायद। रात मे नींद खुली। किसी का तो हात पिटपर फेर रहा था। बहुत प्यार भरा स्पर्श था। पर सामने कोण बैठा है अंधेरे में समझ में नही आया। नींद के आखे बहुत घबरा गई और चिल्लाई। 'ये मैं हुं। कम हुआ है ना बुखार?'बाबा का आवाज था। बहुत बहुत खुश हो गयी थी-। 'हा'...कहते हुए उठने लगी। मुझे उनके गोद जाना था। सुनी कभी कभी जाती थी वैसा। पर इतने में मेरी आवाज से जगी हुई सुहास की माँ उठी, और बाबा जल्दी से उठे। 'पाणी'पीने के लिए आया', ऐसा दिखाकर वहा से जल्दी निकल गये। अंधेरे में भी मैने महसूस किया था बाबा बहुत घबरा गये थे। मेरा सपना गिरने के समान सुख एक क्षण में खत्म हुआ था। दया आई उनकी पर ... गुस्सा भी आया। 'इतने बडे कॉलेज में पढानेवाला अध्यापक कितना डरपोक है, ऐसा उस समय लगा था वह स्पष्ट याद आया। आगे जब जब इस अनुभव की याद आई तब तब सुहास की माँ का पिता के ऊपर रहे प्रभाव का आश्चर्य लगने लगा था। किसका प्रभाव था वह? उनके सौंदर्य का, उनकी पढाई का, पैसे का की प्रेम का। ' प्रेम' कहते है उसको? कभी समझा नही। इतना ही जानती थी ऐसा प्रभाव मेरी माँ कभी नही डाल सखी। मुझे मेरे पिता का प्रेम न जानते हुए तो मिला। उसे तो कुछ भी नही मिला। पर, फिर भी माँ की चिड नही आई कभी। प्रेम ही लगा हर समय। उसके निग्रह स्वभाव का अभिमान ही।

बाबा बहुत मजबूर थेअपनी बेटी से कभी खुली आख से प्यार नही कर सके थे ...। स्वयं भी पुरी तरह सुखी थे क्या वे? यह दुःख मन में रखकर ही जीवन जिया होगा ना? इस नये संवेदना से डबडबाई आखे भर आयी। गाल पर आये आसू पोछकर माँ को देखा। नजदीक ही दादी पुरा शरीर एक जगह मोडकर कमजोर हुए आखे छोटे करते बाबा की तरफ देखते पडी थी। माँ सिर्फ खिडकी के बहार नजर लगा के बैठी थी। अंदर से बाहर गई बिजली के लाईन में खिडकी के पास आई जुई की लता दिखाई देती थी। कलियो से भरी हुई वह लता बारिश के शांत लय में उदास होकर भिग रही थी। उजाले के उस लाईन के पैलोर सिर्फ गहरा अंधेरा छाया हुआ था। माँ की आखे उस अंधेरे में ही खोये थे। जब से आई कम से कम पाच घंटे से वह वैसी ही बैठी थी।

आखडी होगी मैं नजदीक गई। कहा, ' माँ,लेट थोडा? चाहती है तो आंगण में लेटा' उसने पलभर मेरी तरफ तिखी नजर से देखा। कभी भी सोते है क्या? हाडिया कमजोर हुई क्या? गुस्से से कहा,और फिर से खिडकी के बहार देखती बैठी रही। मेरी आखो पर आ रही नींद उसकी बोल से एकदम दूर भाग गई। बाबा के शरीर के आस पास बैठे सभी ने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा। वे तो पुरी रात जगी थी। दिनभर की थकावट थी। उनके आखे तो नींद के कारण पूरी तरह छोटी हुई थी। एक के बाद एक बैठ रहे थे। शरीर धर्म कितना चिपकता है शरीर को। इतना ही कभी कभी वही अस्तित्व है ऐसा लगने लगता है -।

नजदीक एक खुर्ची थी। बैठे बैठे उस पर सर टेककर मैं भी बाहर के अंधेरे की तरफ देखते बैठी। ऐसा ही गहन अंधेरा बाबा के प्रति मां के मन में छाया हुआ था। ढूंढने पर भी उसे एक भी उजाले की किरण दिखाई नही देती होगी। इसीलिए तो आखो में बूंद नही आ रहेउस अंधेरे की कुछ बाते मन में उबलक ...र आने लगी। मेरे न समजणेवाले उम्र में की बाते आगे समझने के बाद उसका अर्थ और वेदना के साथ सामने आने लगी...

बाबा पैसे भेजने लगे और हम शहर में कमरा लेकर रहने लगे। तब से अर्थात आज ग्यारह सालो से माँ वैसे आराम से जीई। मन में कभी कोई शिकवा भी होगा पर कभी भी दिखाया नही उसने। आगे आगे - मैं कॉलेज में जाती थी ...पैसे कम पडणे लगे। खेती के काम के दिन माँ गाव में जाकर रहती थी। सालभर की ज्वार, दाल लेकर आती थी। पर इतने पर मनुष्य को जिने आता? नही होगा।

सच तो बाबा ने कभी प्यार ऐसा किया नही था। आगे तो सब खत्म हुआ था। दादा जी का माँ पर बहुत प्यार था। वे थे तब तक बाबा नही आते थे। तभी माँ को अकेला पण कभी नही लगा होगा। दादी कहती, "मैं कहती थी ऐसी कुरूप लडकी को मत बांधो मेरे लडके के गले में सुना नही। भांजीभांजी कहकर - की। अब बैठो उसको लेकर। लडका भी गया हाथ से और भाजी का भी हुआ भला दादा जी दाटते "! अच्छा- थे'चुप हुआ ना, अब दिल शांत ऐसा कहते थे।'उसे ऐसा वैसा कहने की हिम्मत नही थी किसी की घर में, उसको कोई दुःख दे उन्हे अच्छा नही लगता था।

...माँ और दादी की कुछ तो कुजबुज हुई थी। दादी ने गुस्से से कहा,' पांडुरंग की तो क्या गलती? इतना पढालिखा हुआ और ऐसी लडकी को संभाले गा क्या -? ऐसी गुणो की है इसीलिए बैठी ऐसी' दादाजी ने कभी दादी को मारा नही था। पर उस दिन अंगपर दौडते हुए गये थे। 'बहुत हुशार हैं लडका तुम्हारा चूल्हे में डालो उसकी हुशारी। उस लडकी ने,निंदन करके उस साले को पढने के लिये पैसे दियेखाया उस थाली ... में ही छेद करने वाली औलाद उसकी माँ को।

बाबा माँ के पास नही गये ।'उस' रात के बाद दादाजी कमजोर हुये । बाबा को चार बाते बताकर देखा। पर आगे मालूम पडा माँ के साथ कोई संबंध रखनेवाले नही । इस बात पर ही सुहास के माँ ने बाबा को स्वीकार किया था शायद दादाजी बाद में चारपाई पर पडे रहे ...। 'लडकी का नुकसान मैंने मेरे हाथो से कियापती जिंदा होकर भी उसे विधवा के समान जिना पड रहा है ...', ऐसा कहते थे । बाबा के साथ बात करना ही छोड दिया । आगे छ महिने में पुणे पक्षाघात आया और फिर माँ के हाल शुरू हुये, दादाजी को बात करणे नही आती थी । जगह से हिलना तो आता ही नही था । फिर भी उनकी नजरे माँ को हमेशा ढूंढती रहती थी । बहुत कठीणाई से सरू कहकर आवाज देते थे । वे बिमार थे तब बाबा बहुत बार आये थे । पर दादाजी ने नजर उठाकर भी उनके तरफ देखा नही ।

एक सवेरे माँ ने मुझे बहुत जल्दी उठाया । उसकी आखे शूज गयी थी । उसने सिर्फ दो कपडे लिये और वह गाठोडा गोद में लेकर निकली । हम पहली बार न बुलाने पर नैनीहाल आये थे । मेरी पाचवी की परीक्षा हुई थी । सब स्पष्ट याद है मामा ने माँ की पुरी कर्म कहानी सुन ली । आख में पानी लाकर कहा 'सरू', पहिले से कहती है दिया घर या मैका । जो मिलेगा वो खायेंगे । अब मत जा । आगे आठपंधरा दिन गये मामी हम से - आग चुराने लगी। मामा एक शाम बाहर से आये धीमे स्वर में कहा 'सरु', पुरी जिंदगी बितानी है तुम्हारी अभी पुष्पी को ले जायेगा उसका पिता । हम कोई बमन, कोमटी, नही । सोचकर, व्यक्ती अच्छा है घर ठीक है । और माँ को गुस्सा आया अब तुम्हारे खांदे पर बोझ बनकर रहूंगी ऐसा लगा है तुझे? किस को बुला रहा है? एक निवाला कड वा लगा इसीलिए थूककर दुसरा खाने के लिए बर्तन का अनाज है यह? वह भी रात उसने रोकर निकाली थी । ऐसे समय में बाबा का बहुत गुस्सा आता था । और दुसरे दिन से माँ काम पे लगी । फिर भी मामी ने कभी भला बुरा नही निकाला । यही सच..।

'बाबा' कहते हुए आक्रोश जोर से आया । नींद खुली खुर्ची पर सर रखने के कारण आख लगी थी । सुहास आया था । साथ में उसकी बडी मामी । घर आक्रोश से थर थर ने लगा-। सुहास बाबा के शरीर पर गिरकर मुक्त होकर रो रहा था । मैंने पैसे जादा मांगे इसलिये गुस्सा आया क्या? इस याद पर सब जन गदगद होकर रोने लगे । सुनी,रेखा और उनकी माँ सभी व्याकुल होकर रोते थे । बहार की निरव तनी हुई रात उस आक्रोश से काटकर तुकडे तुकडे हुई-। हा । उनका आधार टूटा था, पर हमारा? मुझे नोकरी लगने पर बाबा ने पैसे कभी कभी भेजे थे । उतना ही आधार था उनका । आठ साल उनके पैसे पर जिंदा रहे हम उस आधार की भी जरूरत नही थी । अब रेखा सुनी का होना बाकी था । पर मै तो चोवीस की हो गई थी । मेरी शादी होनी बहुत जरुरी थी । पर, बाबा थोडे ही देखनेवाले थे? मामा को कहा था शायद 'पुष्पा के शादी की चिंता मत करो । उस के नाम के पंधरा हजार बँक में रखे है । उसके भी पगार में से बचाकर रोखो थोडे बहुत । जगह देखते चलोजन्म दिया ... इसीलिए पंधरा हजार देनेवाले थे । बाकी जबाबदारी? मामा ने लेणी चाहिये

थी रेखा, सुनी का बाबा ही करने वाले थे सब। इसी कारण तो आधार उनका गया था। हमें तो था ही नही तो जाने का सवाल ही नही था?

इसीलिये तो ऐसा दिल को तोडणे वाला आक्रोश हमारे दिल से निकल नही रहा हो...

आक्रोश का आवाज कम हुआ और यह कैसा हुआ, कब हुआ, बाबा ने जाते समय क्या कहा, सुहास की याद कैसे निकाली यह नई आई मामी ने सुहास को कहा जाने लगा। उसमें मैं और माँ का होना सवाल ही नही था। पर दादी भी उसमे नही थी। वह भी बेचारी हमारे समान पराई थी, वहा सुहास ने सिर्फ कब आये? पुछताछ की बस।

सुबह होने लगी और अंत्यसंस्कार के लिए जल्दी जल्दी सब दौडणे लगे -। माँ अभी बैठी थी वही। मैं पेशाब के लिए बहार आई। बाथरूम के सामने पॅसेज मे सुबह आई मामी और छोटी मामी धीमी आवाज मे बोल रही थी। मैं रुकी।

हा, पांडुरंग उस दिन बहुत बडा झगडा हुआ था शायद दोनो का। अपनी जानकी कैसे स्वभाव की है पता नही क्या? उनको कही से पता चला की,' पांडुरंग ने अपने पहली बेटी के नाम पर सेविंग किया, बस थयथयाट सुरू किया उन्होंने...। मुझे न बताते हुए और क्या क्या करते हो, यही बताओ नही तो देखो। पांडुरंग भी बहुत चीड गये...उसमें ही दिल का दौरा आया यह पहले एक आकर चला गया था ...'

'उस बिवी को दो तीन सो भेजने लगे थे-। तब से जान की थोडी अलग हुई थी। बार बार झगडे हो रहे थे दोनो के। उसमें ही पहला दिल का दौरा आकर चला गया था...'अर्थात?' बाबा मेरे कारण गये थे? मैं घबरा गई।

मेरी नोकरी के लिये बाबा ने बहुत प्रयास किया था। मैं बीको अव्वल नंबर में पास हुई तब उनको .ए . बहुत आनंद आनंद हुआ था। बीकी परीक्षा देने की सलाह भी उनकी थी.ए .। मौखिकी देने के लिए यही आई थी। साडेतीन साल हो गये उसको भी। स्वयं बाबा आय थे साक्षात्कार के यहा परीक्षा देकर निकलने के लिए समय हुआ। माँ मामी के यहाँ ही थी। वही जाना था। बस् थी पर पोहचणे के लिये रात होनेवाली थी। 'चल घर। सुबह जा।'उनकी आखो में असाहाय प्रेम था। कैसा तो भी हुआ। मेरे उनके यहाँ जाना किसी को पसंत या सुख देनेवाला नहीं था। फिर भी आई थी। सब घर पर थे। सुहास सिर्फ हा हंसा था। रेखा, सुनी एक दो वाक्य बोली-। सुहास के माँ ने भी कहे दो चार वाक्य पर मुझे ही -। बाबा को कोई भी एक शब्द भी बोल नहीं रहा था। 'मेरी शिक्षा बाबा को क्यौ? बाबा ने भी इनको इतना सर पर क्यूँ लिया? ऐसा लगा।

रात में बहुत देर तक नींद नही आयी थी। बैठक कमरे में ऐसे ही लेटी रही। बेडरूम में से दोनो की धुसफूस आवाज सुनाई दे रही थी। एकदम से बाबा का आवाज जोर से आया। 'जानकी तुम्हे दिया हुआ शब्द मैंने पुरी तरह से निभाया। पुष्पा के माँ को छू वा तक नही। पर, पुष्पा की जो जिम्मेदारी है मुझे निभानी पडेगी और ये बात मैंने पहले बता दी थी...'

बडे आये वादा निभाने वाले पुष्पा की माँ पसंद अनेसरिखी नही थी ...। इसीलिए हुआ नही आगे मैं सून न सखी। बहुत बुरा लगा। माँ के प्रति बहुत करुणा आई। सुबह किसी को बताये बिना निकल आई थी। वही बाबा की मेरी अंतिम और एक दुसरे से बात की हुई पहली मुलाखत...। बाबा, मेरे कारण टूटते रहे। मन आक्रोश करके उठा। लगा पुरा घर घुमने लगा जैसे तैसे अंदर आई और माँ के गोद में जाकर रोते रही। बहुत जोरजोर से रेखा-,सुनी कोई भी रोया नही था इतनासुहास के माँ से डरकर कोई मुझे समजाने आया ... नही, सिर्फ माँ पीठ पर हाथ फेरती रही। दादी 'चूप माय कहती रही'। माँ को ही क्यू पर सभी को मेरे रोने का आश्चर्य हुआ था। सुहास के माँ को कोन कोन से संदर्भ लगे कोण जाने-। वह फिर से बेहोश हुई। कितनी देर रोती रही किसे पता। पुरा रोने के बाद उठी तब बाबा को नेहला ने के लिए बाहर लाने की तयारी चल रही थी।

बहार पुरा प्रकाश था। बारिश पुरी बंद हुई थी। आकाश निरभ्र हुआ था। बाबा को उठाया गया। फिर से आक्रोश उठा। मुझे पूछना चाहिये ऐसा लगा, मेरा मन साफ होना चाहिये ऐसा भी लगा। इसीलिए दो दिन लेते रहे बाबा बैठी रही आधा घंटा हुआ होगा और एक अघटीत हुआ भार से किसी ने पुकारा पहिली बीवी को बुला लो पूजा के लिये बहुत शोर हुआ कोई आया मा को चलो कहा लगा मना करेगी पर निशब्द बाबा बैठे तेव्हा पास जहा बैठने के लिए कहा वही बेटी अंतिम बार कुमकुम लगाकर ओटी भरते समय उसके चेहरे पर एक विशिष्ट विजय दिखाई दे रहा था मुझे कैसा तो भी लग रहा था कैसे जीत लग रही होगी उसको अंतिम समय मे ही क्यू ना हो मान मुझे ही मिलाना इसका होगा या मरने के बाद ही क्यू ना बहुत सुंदर विद्यावान पती के पास चार लोगो मे बैठी इसका होगा किसी का भी हो पर व विचित्र राहता उसकी ऐसी मुद्रा कभी देखी नही थी।

बडे आये वादा निभाने वाले पुष्पा की माँ पसंद अनेसरिखी नही थी ...। इसीलिए हुआ नही आगे मैं सून न सखी। बहुत बुरा लगा। माँ के प्रति बहुत करुणा आई। सुबह किसी को बताये बिना निकल आई थी। वही बाबा की मेरी अंतिम और एक दुसरे से बात की हुई पहली मुलाखत...। बाबा, मेरे कारण टूटते रहे। मन आक्रोश करके उठा। लगा पुरा घर घुमने लगा जैसे तैसे अंदर आई और माँ के गोद में जाकर रोते रही। बहुत जोरजोर से रेखा-,सुनी कोई भी रोया नही था इतनासुहास के माँ से डरकर कोई मुझे समजाने आया ... नही, सिर्फ माँ पीठ पर हाथ फेरती रही। दादी 'चूप माय कहती रही'। माँ को ही क्यू पर सभी को मेरे रोने का आश्चर्य हुआ था। सुहास के माँ को कोन कोन से संदर्भ लगे कोण जाने-। वह फिर से बेहोश हुई। कितनी

देर रोती रही किसे पता। पुरा रोने के बाद उठी तब बाबा को नेहला ने के लिए बाहर लाने की तयारी चल रही थी।

बाहर पुरा प्रकाश था। बारिश पुरी बंद हुई थी। आकाश निरभ्र हुआ था। बाबा को उठाया गया। फिर से आक्रोश उठा। मुझे पूछना चाहिये ऐसा लगा, मेरा मन साफ होना चाहिये ऐसा भी लगा। दो दिन लेटे रहे बाबा? माँ और मैं वैसे ही बैठी रही। अधा घंटा हुआ होगा और एक अघटीत हुआ। बाहर से किसी ने पुकारा पहली बीवी को बुला लो पूजा के लिये। बहुत शोर हुआ। कोई आया माँ को 'चलो ' कहा ।लगा मना करेगी पर वह उठी। निबशब्द बा:ा बैठे थे वहां पास जहां बैठ ने के लिए कहा वही बैठी। अंतिम बार कुमकुम लगाकर ओटी भरते समय उसके चेहरे पर एक विशिष्ट विजय दिखाई दे रहा था। मुझे कैसा तो भी लग रहा था। कैसी जीत लग रही होगी उसको? अंतिम समय में ही क्यू ना हो मान मुझे ही मिला ना? इसका होगा या मरने के बाद ही क्यू न बहुत सुंदर, विद्यावान पती के पास चार लोगो में बैठी इसका होगा ?किसी का भी हो, पर वह विचित्र लग रहा था। उसकी ऐसी मुद्रा कभी देखी नही थी।

इसके उलटा सुवास के मा को दो चार औरतो ने पकडकर बिठाया व्याकुल होकर व सर झुका लेती थी उसको रोना भी नही आता था मुझे जो लगा व सभी को लगाता कुजबूज हो रही थी

स्मशान की तरफ जाते समय पुरे रस्ते में माँ के चेहरे पर जो विजय था वह वैसा ही था। सुहास ने आग लगाई। ज्वाला आकाश में उडने लगी। सभी के चेहरे काले पडे थे। सुहास के माँ को चक्कर आई, पर माँ का चेहरा तेजस्वी हुआ था। वह उपर गई हुई ज्वाला की तरफ देखते हुये स्वयं में डूबी थी। माथा फुटणे का आवाज आया और कोण जाणे, वह तेज तुरंत उतर गया। उसका भी चेहरा काला पडा। दो दिन में पहली बार सुख गया। एक घंटा पहले मिला वह सन्मान फिर से मिलने वाला नही यह सोचकर तो नही माँ उदास हुई।

घर आने के बाद नहा कर यहा से जाना चाहिए ऐसा विचार था,पर मामा ने कहा, ' 'कल ही तिसरा हैं। वैसे तो आज ही है। पर कल दूध डालेंगे उतनी अस्थी एकटा करके जायेंगे।'

'हा, उतना ही क्यूँ रखेंगे? कल उतनी अस्थिया जमा करके जायेंगे माँ ने भी कहा--------। फिर से एक बार वह सन्मान कल मिलेगा ऐसा लग रहा होगा शायद। रुके।

नहाना हुआ। किसीकिसी ने खाने के माँ को डीबे लाकर दि -ये थे। दिया उतना खा के सभी जन जगह मिली वही लेटे मैं भी बैठक में सोपे पर लेटी। सुबह तक एक जगह पर बैठी हुई माँ पागल के समान घर का सामान, फर्निचर का निरीक्षण करने लगी। इस कमरे से उस कमरे मे देख रही थी। सुहास की मामी सोई नही थी। वह चमत्कारिक नजर से माँ की तरफ देख रही थी। अंत में उठी।

'चल ,वैसे क्या घूम रही हो? चल सो जा' कहते हुए माँ के हाथ को पकडकर लाया। उसने फिर से एक दीर्घ सास ली। पती का वह संसार जिस में कही भी वह नही थी -। यह देखकर इर्षा लगी क्या उसको? थोडी दया आई माँ की। साल में दो साडीया जो फटी दो साडी जोडी हुई और पेट को रोटी इसके अतिरिक्त क्या जी वह? और यहा सुसज्ज किचन था। कपाट भर के साडिया थी। क्या नही था ।उसको इर्षा लगी उस में गलत क्या था? बहुत देर दोनो छत की तरफ एकटक देखते लेटे रहे।

दुसरे दिन स्मशान में जाते समय पहिले दिन के समान दुःख का सागर उमरता हुआ दिखाई नही दिया। दुःख को ओहोटी लगी थी। वैसे चौथा दिन यह ओहोटी लगना प्राकृतिक था। स्मशान में पहुँचे। पहले समान मां दुर् जाकर चुपचाप देखते बैठी। कल की मुद्रा नही थी। सभी रिश्तेदारों को रक्षे की पूजा करने के लिए कहा गया। बहुत जल्दी माँ सबसे पहले आगे हुई। सभी देखते रहे। मुझे लज्जा जैसा लगा। पूजा करके व फिर से आकर बैठी। एक दिन का खुला हुआ आकाश आज फिर से सुबह से भरकर आया था। बारिश शुरू होगी ऐसा लग रहा था।

'चलो',चलो ।अस्थिया जमा करो...' पूजा होने के बाद किसी ने जल्दी की। माँ फिर उठी सबसे आगे होकर गिनकर पाँच अस्थी जमा की। वही डाले हुए नये कपडे पर रखी और पहली जगह पर जाकर बैठी। संघर्ष करके आर्थिक अधिकार हासिल किया था। उम्र के साथ शारीरिक आवश्यकता की तीव्रता कम हुई होगी, पर मन की आवश्यकता उसका अधिकार उसकी कमीया वैसे ही थी।

'यह माथे की कवटी, हड्डी, यह घुटनों कीयह पसली ...' ऐसी बाते करते हुए हडिया जमा करना शुरू था। इतने में बडी मामी आगे आयी। माँ के पास बैठी। कल लगाया कुमकुम वैसे धुंदला माँ के माथे पर था। वह उन्होंने हाथ से साफ किया और पास ही के दो पत्थर लेकर माँ की चुडिया के हाथ उस पर रखे। चुडिया पर पत्थर मारा उन्होंने और माँ जोर से रोई। एक एक चुडी टू टने लगी और माँ जोर जोर से रोने लगीं थी। सभी आश्चर्य से उसकी तरफ देख रहे थे ...' माँ, इतने विश्वास से यह वानवसा आदि प्रकार क्यू करती हो बाबा ने कहा क्या संभाला था तुम्हारा?

पागल के समान बात मत कर। ऐसी कैसी शिक्षा है तुम्हारी ? माँ भी बोलने के लिए शिकती है ।उनका पाप पुण्य उनके संग मेरा मेरे संग-। 'माथे पे कुमकुम, हाथ में चुडिया के साथ मृत्यू आनी चाहिये यही मांगती हु...? यही सौभाग्य है इसी कारण तो समान हैमाँ ...नही तो शादी आदि कार्यक्रमा में कोई नही पूछेगा ... जवाब कोने में मिट्टी का बर्तन होकर रखना पडता है का हर बार।

बारिश रिमझिम सुरू हुई थी। सुवास की माँ की चुडिया तोडी गई। सभी जन अपने घर जाने की जल्दी में थे और माँ जोर जोर से रो रही थी-।आज अकेली ऐसी रो रही थीऔर तभी मुझे याद आई ... -टेनीसन की लाईन

Like summer tempest came her tears.

****